अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर(छत्तीसगढ़)

सेमेस्टर पाठ्यक्रम

एम.ए. हिन्दी

पाठ्यक्रम विवरण एवं अंक विभाजन

सेमेस्टर	प्रश्न पत्र	विषय/प्रश्न पत्र का नाम	अंक विभाजन		
			सेमेस्टर परीक्षा	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
प्रथम	1	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल)	80	20	100
	2	प्राचीन काव्य	80	20	100
	3	आधुनिक गद्य साहित्य (नाटक एवं निबंध)	80	20	100
	4	भाषा विज्ञान	80	20	100
				योग	400

सेमेस्टर	प्रश्न पत्र	विषय/प्रश्न पत्र का नाम	अंक विभाजन		
			सेमेस्टर परीक्षा	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
द्वितीय	1	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल,)	80	20	100
	2	मध्यकालीन काव्य	80	20	100
	3	आधुनिक गद्य साहित्य (उपन्यास एवं कहानी)	80	20	100
	4	हिन्दी भाषा	80	20	100
				योग	400

सेमेस्टर	प्रश्न पत्र	विषय/प्रश्न पत्र का नाम	अंक विभाजन		
			सेमेस्टर परीक्षा	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
तृतीय	1	भारतीय काव्यशास्त्र	80	20	100
	2	आधुनिक काव्य	80	20	100
	3	प्रयोजन मूलक हिन्दी	80	20	100
	4	भारतीय साहित्य	80	20	100
				योग	400

सेमेस्टर	प्रश्न पत्र	विषय/प्रश्न पत्र का नाम	अंक विभाजन		
			सेमेस्टर परीक्षा	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
चतुर्थ	1	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	80	20	100
	2	छायावादोत्तर काव्य	80	20	100
	3	पत्रकारिता प्रशिक्षण	80	20	100
	4	लोक साहित्य, छत्तीसगढ़ी भाषा का साहित्य	80	20	100
				योग	400
				कुल योग	1600

अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

सेमेस्टर पाठ्यक्रम

एम.ए. हिन्दी

सेमेस्टर–I

प्रश्नपत्र–I (अनिवार्य)

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल)

पूर्णांकः– 100

मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80

आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावनाः–किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति, दशा, एवं संवेदना के विविध स्वरूपों का संचित रूप यहां के साहित्य में परिलक्षित होता है। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण चित्तवृत्तियों में परिवर्तन होता है, फलतः साहित्यिक रूपों में भी इसे देखा–परखा जा सकता है। हिन्दी क्षेत्र परिस्थितियों से कमोबेस पूरा भारत प्रभावित है। आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा–शैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है। अतः इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है।

पाठ्य विषयः–

इकाई– 01इतिहास–दर्शन और साहित्येतिहास, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ, हिन्दी साहित्य का इतिहास , काल, विभाजन ,सीमा निर्धारण और नामकरण की समस्याएँ।

इकाई–02 हिन्दी साहित्य–आदिकाल की पृष्ठभूमि, वीरगाथाकाल तथा सिद्ध और नाथ साहित्य, रासो आदिकालीन काव्य, जैन साहित्य, साहित्यिक प्रवृत्तियॉ, काव्य धाराऍ, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाऍ –> गद्य

इकाई–03 पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक चेतना एवं भक्ति आंदोलन तथा रचनाऍ।

इकाई–04 उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल–सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति, एवं लक्षण ग्रंथों की परम्परा, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराऍ (रीति बद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त) प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाऍ।

इकाई–05 लधुउत्तरीय प्रश्न एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न, सम्पूर्ण पाठ्यकम से किये जायेंगे।

इकाई विभाजन	**अंक विभाजन**
इकाई01–आलोचनात्मक प्रश्न 01	15×1 =15
इकाई02– आलोचनात्मक प्रश्न 01	15×1 =15
इकाई03– आलोचनात्मक प्रश्न 01	15×1 =15
इकाई04– आलोचनात्मक प्रश्न 01	15×1 =15
इकाई05– लधुत्तरीय प्रश्न (पाँच)	5×2 =10
अतिलधुत्तरीय /वस्तुनिष्ठ प्रश्न (दस)	10×1 =10

आंतरिकमूल्यांकन =20

सहायक पुस्तकें:—

- हिन्दी साहित्य का इतिहास — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- हिन्दी साहित्य का इतिहास — डॉ. नगेन्द्र
- हिन्दी साहित्य का आदिकाल — आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिन्दी साहित्य — आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- दूसरी परम्परा की खोज — डॉ. नामवर सिंह
- हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास — डॉ. नामवर सिंह
- हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास — डॉ. नंद दुलारे वाजपेयी

सेमेस्टर–I
प्रश्नपत्र–II (अनिवार्य)
प्राचीन काव्य

पूर्णांक:– 100
मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80
आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना:–हिन्दी के आदिकालीन काव्य अपनी पृष्ठभूमि मेंअपभ्रंश के अवदान को पूरी तरह समेटे हुए है। प्रबंध, मुक्तक आदि काव्यरूपों में रचित और अपभ्रंश, अवहट्ट एवं देशी भाषा में अभिव्यंजित आदिकालीन साहित्य की परवर्ती कालों को प्रभावित करने में संक्रिय एवं सक्षम भूमिका रही है। इसके अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। पूर्वमध्यकालीन (भक्तिकालीन) काव्य लोक–जागरण और लोकमंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावात्मक एकता और सांस्कृतिक परम्परा को सुरक्षित रखा है।
इस प्रश्न पत्र में 03 कवियों का अध्ययन अपेक्षित है। उनकी कालजयी कृतियों का उल्लेख यहां किया दिया गया है। द्रुतपाठ के अध्ययन के लिए 05 कवि चयनित है। व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्नांकित 03 कवियों का अध्ययन किया जाएगा।

इकाई 01:–विद्यापति– व्याख्या– विद्यापति पदावली, संपादक–रामवृक्ष बेनीपुरी, प्रारंभिक 20 पद
आलोचना– व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भक्ति भावना, श्रृगांर वर्णन, प्रकृति चित्रण, सौंदर्य चित्रण, गीत पद्धति, काव्य कला, अंलकार योजना, भाषा, संस्कृत साहित्य का प्रभाव।

इकाई 02:– कबीर व्याख्या– कबीर ग्रंथावली, संपा– डॉ. श्यामसुन्दर दास 80 साखियाँ तथा 20 पद
निर्धारित साखियाँ एवं पद – गुरूदेव को अंग – 01 से 20, सुमिरण का अंग– 1 से 10, विरह का अंग– 1 से 10, रस का अंग– 1 से 10, ग्यान विरह का अंग – 1से 10, परचा का अंग– 1 से 10तक
पद संख्या – 11, 16, 23, 24, 27, 33, 40, 43, 49, 51, 64, 70, 72, 74, 89, 92, 95, 98, 103, 108(20 पद)
आलोचना – व्यक्तित्व एवं कृतित्व, धार्मिक विचार, सामाजिक विचार, प्रेमतत्व, विरह भावना, रहस्यवाद, दार्शनिकता, उलटवासिया और प्रतीक पद्धति, काव्यकला, अंलकार योजना, भाषा।

इकाई 03:– व्याख्या– जायसी '' व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पद्मावत में प्रेमभाव, सौन्दर्य वर्णन, विरह वर्णन, रहस्यभावना एवं दर्शन, प्रकृति चित्रण, चरित्र चित्रण, महाकाव्यत्व, लोकतत्व, काव्यकला, भाषा, अंलकार योजना।

इकाई 04:–द्रुतपाठ के अंतर्गत निम्नांकित पांच कवियों का सामान्य अध्ययन किया जायेगा।
1– अमीर खुसरो 2–रसखान 3– मीरा बाई 4– रैदास 5– रहीम

इकाई 05:– वस्तुनिष्ठ/अतिलघु उत्तरीय प्रश्न – सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से किए जायेगें।

इकाई विभाजन	**अंक विभाजन**
इकाई 01– विद्यापति व्याख्या	07
विद्यापति आलोचना	08
इकाई 02– कबीर व्याख्या	07
कबीर आलोचना	08
इकाई 03– जायसी व्याख्या	07
जायसी आलोचना	08
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न दो	7/8
इकाई 05– लधुउत्तरीय प्रश्न पांच	5×2=10
अतिलधुउत्तरीय सम्पूर्ण पाढ्रय दस	10×1=10
	योग = 80
	आंतरिक मूल्यांकन = 20

सहायक पुस्तके–

1. कबीर और आधुनिक हिन्दी काव्य – डॉ. ललित राठोड, समता प्रकाशन।
2. कबीर की विचारधारा –श्री गोविंद त्रिगुणायत।
3. विद्यापति व्यक्ति और कृतित्व – डॉ. रामसजन पाण्डेय, समता प्रकाशन।
4. भक्ति आंदोलन और मध्यकालीन हिन्दी भक्ति काव्य – डॉ. सुरेशचन्द्र।
5. जायसी और कबीर – सामाजिक संस्कृति के संदर्भ में – डॉ. डी.आर.राहुल।
6. जायसी –श्री विजय देवनारायण साही।

सेमेस्टर–I

प्रश्नपत्र–III (अनिवार्य)

आधुनिक गद्य साहित्य (नाटक एवं निबंध)

पूर्णांकः– 100

मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80

आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना– आधुनिक काव्य में साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है। यह मानव–मन और मस्तिष्क की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम बन गया है। मनुष्य का राग–विराग, तर्क–वितर्क तथा चिंतन–मनन पूर्ण रागात्मकता के साथ कौशलपूर्ण ढ़ंग से गद्य में अभिव्यंजित होता है। आधुनिक काल में गद्य के विविध रूपों का विकास इस बात की पुष्टि करता है। नाटक,निबंध तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है। प्राकृतिक परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास–प्रकिया के साथ इस प्रश्न पत्र में 02 नाटक 05 निबंध पठनीय है।

पाठ्य विषयः– व्याख्या एवं विवेचना के लिए निर्धारित–

नाटक–

इकाई 01:– व्याख्या चन्द्रगुप्त (जयशंकर प्रसाद)
समीक्षा – जयशंकर प्रसाद व्यक्तित्व एवं कृतित्व, नाटक के तत्वों के आधार पर चन्द्रगुप्त नाटक की समीक्षा।

इकाई 02:– व्याख्या– आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश)
समीक्षा – मोहन राकेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व, नाटक के तत्व के आधार पर आषाढ़ का एक दिन की समीक्षा।

इकाई 03:– निबंध

1. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी – साहित्य की महत्ता।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – करूणा।
3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – अशोक के फूल।
4. विद्यानिवास मिश्र – चंद्रमा मनसो जात।
5. हरिशंकर परसाई – भोलाराम का जीव।

इकाई 04:–द्रुतपाठ के अंतर्गत निम्नांकित नाटककार एवं निबंधकार का सामान्य अध्ययन अपेक्षित है।

1. नाटककार–

   1.– भारतेन्दु हरिशचन्द्र

   2.– डॉ. रामकुमार वर्मा

3.– लक्ष्मीनारायण लाल
4.– धर्मवीर भारती
5.– जगदीशचन्द्र माथुर

2. निबंधकार–

1.– भारतेन्दु हरिशचन्द्र
2.– प्रतापनारायण मिश्र
3.– डॉ. नगेन्द्र
4.– विद्यानिवास मिश्र
5.– गोपाल चतुर्वेदी

इकाई विभाजन	**अंक विभाजन**
इकाई 01– चन्द्रगुप्त व्याख्या	07
चन्द्रगुप्त समीक्षा	08
इकाई 02– आषाढ़ का दिन व्याख्या	07
आषाढ़ का दिन समीक्षा	08
इकाई 03– निर्धारित निबंधों से व्याख्या	07
निर्धारित निबंधों से समीक्षा	08
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न दो	7/8
इकाई 05– लधुउत्तरीय प्रश्न पांच	5×2=10
अतिलधुउत्तरीय सम्पूर्ण पाठ्य दस	10×1=10
	योग = 80
	आंतरिक मूल्यांकन = 20

सहायक पुस्तकें:–

1. हिन्दी नाटक विमर्श – डॉ. देवीदास इंगले
2. साठोत्तरी हिन्दी नाटक में युग चेतना – डॉ. विजया गाड़वे
3. मोहन राकेश और उनके नाटक – गिरीश रस्तोगी
4. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
5. निवंध प्रभा – डॉ. श्रीमती शीलप्रभा मिश्र
6. साठोत्तर हिन्दी नाटकों की सामाजिक चेतना – डॉ. श्रीमती जयश्री शुक्ल
7. रचना का नया परिदृश्य – डॉ. श्रीमती जयश्री शुक्ल

सेमेस्टर–I
प्रश्नपत्र–IV (अनिवार्य)
भाषा विज्ञान

पूर्णांक:– 100
मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80
आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना–साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषाविज्ञान की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाईयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर, उनके अंतःसंबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतदृष्टि देता है अपितु भाषा–विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है।

पाठ्य विषय:–

इकाई 01– भाषा और भाषा विज्ञान – भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा–व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक–प्रकार्य। भाषा विज्ञान स्वरूप एवं व्याप्ति , अध्ययन की दिशायें– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

इकाई 02– स्वन प्रकिया – स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखायें, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण।

इकाई 03– व्याकरण – रूप प्रकिया का स्वरूप और शाखायें– रूपिम की अवधारणा और भेद मुक्त– आबध्य, अर्थ दर्शी और संबंध दर्शी, रूपिम के भेद और प्रकार्य। वाक्य की अवधारणा, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण, निकटस्थ अवयव विश्लेषण, गहन–संरचना और बाहय संरचना।

इकाई 04– अर्थ विज्ञान – अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध , पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ परिवर्तन।

इकाई 05– लघुउत्तरीय एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न संपूर्ण पाठ्यकम से किया जायेगा।

	अंक विभाजन
आलोचनात्मक प्रश्न (इकाई एक, दो, तीन, चार से एक–एक प्रश्न)	15×4 = 60
अतिलघुउत्तरीय / लघुउत्तरीय (पांच)	05×2 = 10
वस्तुनिष्ठ प्रश्न (दस) (इकाई पांच से)	10×1 = 10
	योग = 80
	आंतरिक मूल्य = 20

सहायक पुस्तकें:–

1. भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा – डॉ.भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी विज्ञान – डॉ.देवेन्द्रनाथ शर्मा
3. भाषा विज्ञान एवं भाषा विचार – डॉ. पोतदार, डॉ. खराटे
4. भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा – डॉ.बी.डी. शर्मा
5. सामान्य भाषा विज्ञान – डॉ.बाबू राम सक्सेना

सेमेस्टर–II
प्रश्नपत्र–I (अनिवार्य)
हिन्दी साहित्य का इतिहास–आधुनिक काल

पूर्णांकः– 100
मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80
आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना –किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति, दशा एवं संवेदना के विविध स्वरूपों का संचित रूप यहां के साहित्य में परिलक्षित होता है। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण चित्तवृत्तियों में परिवर्तन होता है, फलतः साहित्यिक रूपों में भी बदलाव आ जाता है। इस बदली हुयी विकास प्रकिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही देखा–परखा जा सकता है। हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों से कामोबेश पूरा भारत प्रभावित होता रहा है, जिसकी गूंज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित है। आठवीं–नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा–शैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है। इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है।

पाठ्य विषयः–

इकाई 01–
1. आधुनिक काल की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सन् 1856 ई. की राजक्रांति और पुनर्जागरण।
2. भारतेन्दु युग– प्रमुख साहित्यिकार , रचनाएं और साहित्यिक विशेषतायें।
3. द्विवेदी युग – प्रमुख साहित्यिकार , रचनाएं और साहित्यिक विशेषतायें।

इकाई 02–
1.हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास, छायावादी काव्य, प्रमुख साहित्यिकार , रचनाएं और साहित्यिक विशेषतायें।
2. उत्तर छायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ–प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यिकार , रचनाएं और साहित्यिक विशेषतायें।

इकाई 03– 1. हिन्दी गद्य की प्रमुख विधायें– कहानी ,उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध का विकास।

इकाई 04– हिन्दी की अन्य गद्य विधायें– रेखाचित्र, स्मरण, यात्रा साहित्य, आत्मकथा, जीवनी और रिपोतार्ज का विकासात्मक अध्ययन।

इकाई 05– लधुउत्तरीय एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न संपूर्ण पाठ्यकम से किये जायेगें।

इकाई विभाजन		अंक विभाजन
इकाई 01– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15×1 = 15
इकाई 02– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15×1 = 15
इकाई 03– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15×1 = 15
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15×1 = 15
इकाई 05– लधुउत्तरीय प्रश्न (पांच)	01	05×2 = 10
अतिलधुउत्तरीय / वस्तुनिष्ठ (दस)		10×1 = 10
		योग = 80
		आंतरिक अंक = 20

सहायक पुस्तकें–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. हिन्दी साहित्य – आचार्यहजारी प्रसाद द्विवेदी
5. दूसरी परम्परा की खोज – डॉ. नामवर सिंह
6. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – डॉ. नंद दुलारे बाजपेयी

सेमेस्टर–II
प्रश्नपत्र–II (अनिवार्य)
मध्यकालीन काव्य

पूर्णांकः– 100
मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80
आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावनाः–मध्यकालीन काव्य (रीतिकाल) अपनी कलात्मक अभिव्यंजना में बेजोड़ है। इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग की धड़कनों को समग्रता से समझने के लिए अनिवार्य है।
इस प्रश्न पत्र में 03 कवि पठनीय है उनकी कालजयी कृतियों का उल्लेख यहाँ किया गया है। द्रुतपाठ रूप के अध्ययन के लिए 05 कवि चयनित है।

पाठ्य विषयः– व्याख्या एवं निवेचन के लिए निम्नलिखित 03 कवियों का अध्ययन किया जायेगा–
इकाई 01– सूरदास– व्याख्या– भ्रमरगीत सार संपा.– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– पद संख्या 01 से 10, 21 से 30, 51 से 60, 61 से 70 (कुल 40 पद)।
आलोचना– सूर व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भ्रमरगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि, भक्तिभावना, वियोग वर्णन, उपालंभ काव्य , सूर की गोपियाँ, सूर के उद्धव, काव्य कला।

इकाई 02– तुलसीदास – व्याख्या– रामचरितमानस(गीता प्रेस) सुन्दर काण्ड पूर्ण।
आलोचना तुलसीदास व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भक्ति भावना, महाकाव्यत्व, लोक जीवन एवं संस्कृति, काव्य कला, लोकनायकत्व, दार्शनिकता, गीतितत्व, भाषाशैली, अलंकार योजना।

इकाई 03– बिहारीलाल– व्याख्या – बिहारी रत्नाकर संपा.– जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर (प्रारंभिक 80 दोहे)

आलोचना– बिहारी व्यक्तित्व एवं कृतित्व, संयोग–वियोग, निरूपण, सौदर्य चित्रण, बहुज्ञता, काव्य सौदर्य, काव्य कला, भाषा शैली, अंलकार योजना।

इकाई 04– निम्नांकित 05 कवियों का अध्ययन किया जाना है–
1. धनानंद 2. केशवदास 3. देव 4. भूषण 5.पद्रमाकर

इकाई 05– लधुउत्तरीय एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न संपूर्ण पाठ्यक्रम से ।

इकाई विभाजन	अंक विभाजन
इकाई 01– सूरदास व्याख्या	07
सूरदास आलोजना	08
इकाई 02– तुलसीदास व्याख्या	07
तुलसीदास आलोजना	08
इकाई 03– बिहारी व्याख्या	07
बिहारी आलोचना	08
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न (दो)	7 / 8
इकाई 05–अतिलघुउत्तरीयवस्तुनिष्ठ / लघुउत्तरीय (पांच)	05×2=10
सम्पूर्ण पाठ्यक्रम (दस)	10×1=10
	योग=80
	आंतरिक मूल्यांकन =20

सहायक पुस्तकें:–
1. रीतिकालीन तथ्य और चिंतन – डॉ. सरोजनी पाण्डेय
2. मध्यकालीन कवियों के काव्य के काव्य सिद्धांत – डॉ. छबिनाथ त्रिपाठी
3. कृष्ण काव्य और सूर – डॉ. प्रेमशंकर
4. गोस्वामी तुलसीदास व्यक्ति और काव्य – डॉ. रमेशचंद्र शर्मा, डॉ. रूचि बाजपेयी
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र

सेमेस्टर–II
प्रश्नपत्र–III (अनिवार्य)
आधुनिक गद्य साहित्य(उपन्यास एवं कहानी)

पूर्णांकः– 100
मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80
आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावनाः–आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है। यह मानव–मन और मस्तिष्क के अभिव्यक्ति का सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम बन गया है। मनुष्य का राग विराग, तर्क–वितर्क तथा चिंतन–मनन जिस रागात्मकता के साथ कौशलपूर्ण ढ़ग से गद्य में अभिव्यंजित होता है, वैसा अन्य साहित्यरूप में नहीं। आधुनिक काल में गद्य के विविध रूपों का विकास इस तथ्य का साक्षी है कि प्रौढ़–शक्तिशाली प्रतिरूप, उसकी व्यक्तित्व एवं स्वतंत्र चेतना का विश्वसनीय प्रतिनिधि है। उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है। आज मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश,परिस्थिति तथा चिंतन की विकास–प्रकिया के साथ सहज प्रमाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है।

पाठ्य विषयः–

व्याख्या एवं विवेचना के लिए निर्धारित–

इकाई 01– उपन्यास–

व्याख्या– गोदान – प्रेमचन्द्र

समीक्षा– प्रेमचन्द्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व, उपन्यास के तत्वों के आधार पर गोदान की समीक्षा।

इकाई 02 – (अ) हिन्दी गद्य की अन्य विधाएं।

(ब) महादेवी का गद्य एवं साहित्य।

इकाई .03– कहानी–

व्याख्या–

1. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	–	उसने कहा था
2. जयशंकर प्रसाद	–	पुरस्कार
3. प्रेमचन्द्र	–	पूस की रात
4. निर्मल वर्मा	–	परिन्दे
5. उषा प्रियम्बदा	–	वापसी
6. रांगेय राघव	–	बिरादरी बाहर

समीक्षा– निर्धारित कहानीकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व , कहानी के तत्वों के आधार पर कहानी की समीक्षा।

इकाई 04–निम्नांकित उपन्यासकार एवं कहानीकार का सामान्य अध्ययन किया जाना है–

1. उपन्यासकार–
   1. जैनेन्द्र 2. भगवतीचरण वर्मा 3.अमृत लाल नागर 4. मृणाल पाण्डेय
2. कहानीकार–
   1. अज्ञेय 2.यशपाल 3.ममता कलिया 4. अमरकांत

इकाई05– लधुउत्तरीय एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न, अतिलधुउत्तरीय संपूर्ण पाठ्यक्रम से।

इकाई विभाजन	**अंक विभाजन**
इकाई 01– गोदान व्याख्या	07
गोदान समीक्षा	08
इकाई 02– मैला आंचल व्याख्या	07
मैला आंचल समीक्षा	08
इकाई 03– निर्धारित निबंधों से व्याख्या	07
निर्धारित निबंधों से समीक्षा	08
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न (दो)	7 / 8
लधुउत्तरीय प्रश्न (पांच)	5×2=10
इकाई 05–अतिलधुउत्तरीय सम्पूर्ण पाठ्रय (दस)	10×1=10
	योग = 80
	आंतरिक मूल्यांकन = 20

सहायक पुस्तकें–

1. हिन्दी की कालजयी कहानियों में मानवीय मूल्य – डॉ. राजेन्द्र सिंह चौहान
2. हिन्दी उपन्यासों की समीक्षा – डॉ. जाधव, डॉ. कुर्रे
3. हिन्दी उपन्यास : वस्तु एवं शिल्प – डॉ. श्रद्धा उपाध्याय
4. हिन्दी कहानी का प्रगतिशील रवैया – डॉ. बी.के. सुब्रमणियम
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्रीनिवास शर्मा
6. प्रेमचंद और अमृत लाल नागर के उपन्यासों में प्रतिफलित सामाजिक चेतना– डॉ. डी.एस.ठाकुर प्रकाशन: पंकज बुक्स, पटपड़गंज, दिल्ली

सेमेस्टर–II
प्रश्नपत्र–IV (अनिवार्य)
हिन्दी भाषा

पूर्णांक:– 100
मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80
आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना:–भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकास क्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिन्दी के अध्येताओं के लिये अत्यंत उपयोगी है।

पाठ्य विषय:–

इकाई 01– हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि , प्राचीन भारतीय आर्य भाषायें– वैदिक तथा लौकिक संस्कृति एवं उनकी विशेषतायें।
भारतीय आर्य भाषायें – पाली, प्राकृत, शौरसेनी, अर्धमागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषतायें।
आधुनिक भारतीय आर्य भाषायें और उनका वर्गीकरण।

इकाई02– हिन्दी का भौगोलिक विस्तार– हिन्दी की उपभाषाएं, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ीबोली, ब्रज और अवधि की विशेषतायें।

इकाई 03– हिन्दी का भाषिक स्वरूप – हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था – खंड्य, खड्येत्तर
हिन्दी शब्द रचना– उपसर्ग, प्रत्यय , समास। रूपरचना–लिंग, वचन और कारकव्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और किया रूप।
हिन्दी वाक्य – रचना: पदकम और अन्विति।

इकाई 04– हिन्दी के विविध रूप– संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, मातृभाषा माध्यम भाषा, संचार भाषा, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।

हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधायें – आकड़ा–संसाधन और शब्द –संसाधन, वर्तनी–शोधक, मशीन अनुवाद, हिन्दी और मानकीकरण।.

देवनागरी लिपि :– विशेषतायें और मानकीकरण।

इकाई 05– लधुउत्तरीय /वस्तुनिष्ठप्रश्न संपूर्ण पाठ्यक्रम से ।

इकाई विभाजन		**अंक विभाजन**
इकाई 01– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15×1 = 15
इकाई 02– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15×1 = 15
इकाई 03– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15×1 = 15
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15×1 = 15
इकाई 05– लधुउत्तरीय प्रश्न (पांच)	01	5×2 = 10
अतिलधुउत्तरीय/वस्तुनिष्ठ (दस)		8×1 = 08
		योग– 80
		आंतरिक मूल्यांकन – 20

सहायक पुस्तकें–

1. भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी – डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी
3. राष्ट्र हिन्दी : मेरे विचार – डॉ. धर्मवीर चंदेल
4. हिन्दी भाषा एक अबाध प्रवाह – डॉ. मीता, डॉ. सुमन
5. भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा – डॉ. बी.डी. शर्मा

सेमेस्टर–III
प्रश्नपत्र–I (अनिवार्य)
भारतीय काव्य शास्त्र

पूर्णांकः– 100
मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80
आंतरिक मूल्यांकन :– 20

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्य शास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। इसमें वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की वास्तविक परख की जा सके । सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझानें और जांचनें परखनें के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है–

पाठ्य विषय–

इकाई–01–संस्कृत काव्यशास्त्र– काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य प्रकार। रस सिद्धांत–रस का स्वरुप, रस निष्पति, रस के अंग, साधारणीकरण।

इकाई–02–अलंकार सिद्धांत–मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण। रीति सिद्धांत–रीति की अवधारणा, काव्यगुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ

इकाई–03–वक्रोक्तिसिद्धांत की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद, औचित्य सिद्धांत–प्रमुख स्थापना, औचित्य के भेद

इकाई–04– ध्वनि सिद्धांत–ध्वनि का स्वरुप, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद। हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियां – शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, शैली वैज्ञानिक, और समाजशास्त्रीय।

इकाई–05– लघुत्तरीय एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न संपूर्ण पाठ्यक्रम से किया जायेगा।

इकाई विभाजन अंक विभाजन

इकाई 01– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15		
इकाई 02– आलोचनात्मक प्रश्न	01			15x1	= 15
इकाई 03– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15		
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न	01			15x1	= 15
इकाई 05– लघुत्तरीय प्रश्न (पाँच)				5x2	= 10
अतिलघुउत्तरीय / वस्तुनिष्ठ प्रश्न(दस)				10x1	= 10

योग– 80

आंतरिक मूल्यांकन – 20

सहायक पुस्तकें–

1. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र।
2. भारतीय आलोचना शास्त्र – डॉ. राजवंश सहाय बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना।
3. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
4. संस्कृत काव्यशास्त्र (भाग1–2) – डॉ. बलदेव प्रसाद उपाध्याय
5. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. भगीरथी मिश्र
6. भारतीय काव्यशास्त्र –श्री उदयभानु सिंह

––––––00––––––

अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर(छत्तीसगढ़)

सेमेस्टर पाठ्यक्रम

एम.ए. हिन्दी

सेमेस्टर–III

प्रश्नपत्र–II (अनिवार्य)

आधुनिक काव्य

पूर्णांक:– 100

मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80

आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना–आधुनिक काव्य–पुनर्नवा के रुप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएं है। उपेक्षित विषय भी यहां सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएं, भावनाएं एवं नूतन विचार सरणियॉं इसमें अभिव्यक्त हुई हैं विविध धाराओं में प्रवाहमान आधुनिक हिन्दी काव्य, प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है।

अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

पाठ्य विषय–

इकाई–01– मैथिलीशरण गुप्त साकेत नवम सर्ग की व्याख्या।
आलोचना–मैथिलीशरण गुप्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व, संपूर्ण साकेत से आलोचनात्मक प्रश्न

इकाई–02– जयशंकर प्रसाद कामायनी– चिन्ता,श्रद्धा,लज्जा सर्ग की व्याख्या।
आलोचना– जयशंकर प्रसाद व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सम्पूर्ण कामायनी से आलोचनात्मक प्रश्न।

इकाई–03– पं. सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति एवं कुकुरमुत्ता की व्याख्या।
आलोचना – निराला व्यक्तित्व एवं कृतित्व, राम की शक्ति पूजा का काव्य वैभव, सरोज स्मृति कविता की संवेदना, कुकुरमुता में निहित व्यंग्य।

इकाई–04– निम्नांकित कवियों का सामान्य अध्ययन किया जाना है –
1.अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" 2.जगन्नाथ दास रत्नाकर, 3.महादेवी वर्मा, 4. हरिवंश राय बच्चन 5.त्रिलोचन शास्त्री

इकाई–05– लघुत्तरीय एवं वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यकम से किए जायेगे।

इकाई विभाजन		अंक विभाजन
इकाई–01– मैथिलीशरण गुप्त व्याख्या	–	07
मैथिलीशरण गुप्त आलोचना	–	08
इकाई–02– जयशंकर प्रसाद व्याख्या	–	07
जयशंकर प्रसाद आलोचना	–	08
इकाई–03– पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला व्याख्या	–	07
पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आलोचना	–	08
इकाई–04– आलोचनात्मक प्रश्न (दो)	– 07+08	= 15
इकाई–05– लघुत्तरीय (पांच)	– 5x2	= 10
अतिलघुत्तरीय / वस्तुनिष्ठ	– 10x1	= 10
	योग–	80
	आंतरिक मूल्यांकन –	20

सहायक पुस्तकें :–

1. साकेत नवम् सर्ग का काव्य सौष्ठव –श्री कन्हैया लाल सहाय
2. कामायनी एक पुनर्मूल्यॉकन –श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी
3. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ – डॉ0 नगेन्द्र
4. कवि निराला –आचार्य नंददुलारे बाजपेयी
5. स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी महाकाव्य – डॉ0 निजामुद्दीन
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

सेमेस्टर–III
प्रश्नपत्र–III (अनिवार्य)
प्रयोजन मूलक हिन्दी

पूर्णांक:– 100
मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80
आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना :–

भाषा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु और व्यावहारिक चेतना है, जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य हैं – सौंदर्य परक और प्रयोजन परक। भाषा के प्रयोजन परक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन व्यवहार से हैं, और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज सापेक्ष सेवा माध्यम (सर्विस टूल्स) के रूप में प्रयुक्त होती हैं। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजन मूलक हिन्दी का अध्ययन अति अपेक्षित है। इसके विविध आयामों से न केवल रोजगार या जीविका की समस्या हल होगी अपितु राष्ट्रभाषा का संस्कार भी दृढ होगा।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01– हिन्दी के विभिन्न रूप सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यमभाषा, मातृभाषा कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) में प्रमुख प्रकार्य प्रारूपण,पत्र–लेखन, संक्षेपण, पल्लवन टिप्पण।पारिभाषिक शब्दावली, स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण सिध्दान्त, ज्ञानविज्ञान विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली, विज्ञापन लेखन।

इकाई–02– कम्प्यूटर परिचय, उपयोग तथा क्षेत्र वेब पब्लिशिंग का परिचय इंटरनेट, ई–मेल भेजना प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख पोर्टल, डाउनलोडिंग व अपलोडिंग हिन्दी सॉफ्टवेयर, पैकेज

इकाई–03– अनुवाद–परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएं
अनुवाद का स्वरुप– अनुवाद कला विज्ञान अथवा शिल्प, अनुवाद की इकाई शब्द पदबंध, वाक्य पाठ, अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि–विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन अनुवाद प्रकिया के विभिन्न चरण, अनुवाद की समस्याएं साहित्यिक, कार्यालयीन, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विधि, विज्ञापन, मीडिया

इकाई–04– जनसंचार : प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ जनसंचार माध्यमों का स्वरुप –मुद्रण, श्रव्य, दृश्य श्रव्य, इंटरनेट श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलीविज़न एवं वीडियो) दृश्य माध्यमों में रुपान्तरण।

इकाई–05– लघुत्तरीय प्रश्न एवं अतिलघुत्तरीय प्रश्न संपूर्ण पाठ्यक्रम से किया जायेगा।

<u>इकाई विभाजन अंक विभाजन</u>

इकाई 01– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 02– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 03– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 05– लघुत्तरीय प्रश्न (पाँच)		5x2	= 10
अतिलघुउत्तरीय / वस्तुनिष्ठ प्रश्न(दस)		10x1	= 10
		योग–	80
	आंतरिक मूल्यांकन–		20

सहायक पुस्तकें

1. प्रयोजन मूलक हिन्दी – डॉ0 राम छबीला त्रिपाठी।
2. प्रमाणिक प्रयोजन मूलक हिन्दी – डॉ0 पृथ्वीनाथ पाण्डेय।
3. आधुनिक विज्ञापन और जन संपर्क – डॉ0 तारेश मारिया।
4. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ0 जयश्री शुक्ला।
5. अनुवाद प्रक्रिया और स्वरुप – डॉ0 कैलाश चंद्र भाटिया।
6. प्रयोजन मूलक कामकाजी हिन्दी – डॉ0 कैलाश चंद्र भाटिया।
7. कामकाजी हिन्दी भूमण्डलीय के दौर में – डॉ0 देशबन्धु राजेश।

अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर(छत्तीसगढ़)

सेमेस्टर पाठ्यक्रम

एम.ए. हिन्दी

सेमेस्टर–III

प्रश्नपत्र–IV (अनिवार्य)

भारतीय साहित्य

पूर्णांकः– 100

मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80

आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना :–

भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा और साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए हिन्दी साहित्य के अध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समकेतिक भारतीय साहित्य की रुपरचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिन्दी के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। तभी उनके ज्ञान–क्षितिज एवं सांस्कृतिक दृष्टि का विकास होगा यही नहीं इससे हिंदी अध्ययन का अंतरंग विस्तार भी होगा इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड होंगे। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

पाठ्य विषयः–

इकाई–01– भारतीय साहित्य का स्वरुप
भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब
भारतीयता का समाजशास्त्र
हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

इकाई–02– बँगला, उडिया, भाषा के साहित्य का इतिहास, प्रमुख कृतिकारों का परिचय तथा महत्वपूर्ण कृतियाँ।

इकाई–03– तुलनात्मक अध्ययन–बंगला साहित्य, उडिया साहित्य और हिंदी साहित्य

इकाई–04– नाटक– हयवदन– गिरीश कर्नाड (कन्नड) से आलोचनात्मक प्रश्न

इकाई–05– लघुत्तरीय प्रश्न एवं वस्तुनिष्ठ अतिलघुत्तरीय प्रश्न संपूर्ण पाठ्यक्रम से किया जायेगा।

इकाई विभाजन अंक विभाजन

इकाई 01– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 02– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 03– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 05– लघुत्तरीय प्रश्न (पाँच)		5x2	= 10
अतिलघुउत्तरीय / वस्तुनिष्ठ प्रश्न(दस)		10x1	= 10
		योग–	80
		आंतरिक मूल्यांकन–	20

सहायक पुस्तकें:–

1. भारतीय साहित्य संपादक डा0 नगेन्द्र
2. भारतीय साहित्य कोश सम्पादक डा0 नगेन्द्र
3. बंगला साहित्य का इतिहास – भारतीय भाषा संस्थान इलाहाबाद
4. भारतीय भाषाओं के साहित्य का इतिहास–केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय दिल्ली
5. भारतीय साहित्य – डा0 मूल चंद्र गौतम
6. हिंदी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचंद्र शुक्ल
7. हिंदी साहित्य का इतिहास–डा0 नगेन्द्र

सेमेस्टर–IV

प्रश्नपत्र–I (अनिवार्य)

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

पूर्णांक:– 100

मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80

आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना :–

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है । इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की वास्तविक परख की जा सके । सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करनें, रचना को उसकी समग्रता में समझानें और जाँचनें परखनें के लिए पाश्चात्य काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है–

पाठ्य विषय–

इकाई–01– प्लेटो– काव्य सिद्धांत, अरस्तू–अनुकरण सिद्धांत, त्रासदी विवेचन,

इकाई–02– लांजाइनस–उदात्त की अवधारणा, वर्डसवर्थ काव्यभाषा का सिद्धांत
कालरिज कल्पना सिद्धांत और ललित कल्पना

इकाई–03– मैथ्यू आर्नाल्ड–आलोचना का स्वरुप और प्रकार्य
टी. एस. इलियट–परंपरा की परिकल्पना, और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वेयत्किकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य

इकाई–04– आई. ए. रिचर्डस–रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यवहारिक आलोचना
सिद्धांत एवं वाद–अभिजात्यवाद, स्वच्छन्दतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद तथा अस्तित्ववाद

इकाई–05– लघुत्तरीयप्रश्न एवं अतिलघुत्तरीय/वस्तुनिष्ठ प्रश्न संपूर्ण पाठयक्रम से किया जायेगा।

इकाई विभाजन		अंक विभाजन	
इकाई 01– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 02– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 03– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 05– लघुत्तरीय प्रश्न (पाँच)		05x2	= 10
अतिलघुउत्तरीय / वस्तुनिष्ठ प्रश्न(दस)		10x1	= 10
		योग–	80
		आंतरिक मूल्यांकन–	20

सहायक पुस्तकें:–

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत – डा0 गणपति चंद्रगुप्त
2. पश्चात्य काव्यशास्त्र – डा0 विजयबहादुर सिंह
3. साहित्य समीक्षा के मानदण्ड – डा0 राजेन्द्र कुमार
4. साहित्य रुप – श्री रामअवध द्विवेदी
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – श्री देवेन्द्रनाथ शर्मा

सेमेस्टर–IV

प्रश्नपत्र–II (अनिवार्य)

छायावादोत्तर काव्य

पूर्णांकः– 100

मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80

आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना–

स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति नें जन्म लिया। स्वप्न अधूरे रहे, संकल्प टूटे। आक्रोश और विद्रोह की प्रवृत्ति व्यापक पैमानें पर परिलक्षित हुई। विज्ञान नें बौद्धिकता का विकास किया, फलस्वरुप नये–नये बिंब, प्रतीक एवं अभिव्यंजना–रुप विकसित हुए। अंतर्विरोधी स्थितियों नें मूल्य विघटन, तनाव संक्रमण, मोहभंग की स्थिति पैदा की, जिसकी अभिव्यंजना विविध रुपों में हुई। वर्तमान समस्याओं, संवेदनाओं की व्यापकता विश्वजनीन हो गई है। इस वैश्विक–संदर्भ की जानकारी और समझदारी के लिए छायावादोत्तर काव्य का अध्ययन आवश्यक है।

इकाई–01– स. ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय' व्याख्या–

1. नदी के द्वीप
2. असाध्य वीणा
3. बाबरा अहेरी
4. यह द्वीप अकेला
5. कलगी बाजरे की
6. हरीघास पर क्षण भर
7. अन्तः सलिला
8. हिरोशिमा

आलोचना– 'अज्ञेय' व्यक्तित्व एवं कृतित्व भावपक्ष, कलापक्ष, काव्य की विशेषताएं काव्यकला,

इकाई–02– गजानन माधव मुक्तिबोध व्याख्या – अंधेरे में

आलोचना– मुक्तिबोध व्यक्तित्व एवं कृतित्व भावपक्ष, कलापक्ष, काव्य की विशेषताएं काव्यकला, लम्बी कविताओं की परंपरा – अंधेरे में

इकाई–03– नागार्जुन व्याख्या–

1. बादल को घिरते देखा है।
2. सिंदूर तिलकित माल
3. वसंत की आगवानी
4. कोई आए तुमसे सीखे
5. तो फिर क्या हुआ
6. यह तुम थी
7. कोयल आज बोली है।
8. अकाल और उसके बाद
9. शासन की बंदूक
10. प्रेत का बयान

आलोचना– नागार्जुन व्यक्तित्व एव कृतित्व, भावपक्ष, कलापक्ष, काव्य की विशेषताएं, काव्यकला,

इकाई–04– निम्नांकित कवियों का सामान्य अध्ययन किया जाना है।

1. श्रीकांत वर्मा 2.दुष्यंत कुमार 3. धूमिल 4.रघुवीर सहाय
5. धर्मवीर भारती

इकाई–05– लघुत्तरीय वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न संपूर्ण पाठ्यक्रम से किया जायेगा।

इकाई विभाजन अंक विभाजन

इकाई 01– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 02– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 03– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 05– लघुत्तरीय प्रश्न (पाँच)		5x2	= 10
अतिलघुउत्तरीय/वस्तुनिष्ठ प्रश्न(दस)		10x1	= 10
		योग–	80
		आंतरिक मूल्यांकन–	20

सहायक पुस्तकें–

1. छायावादोत्तर काव्यधारा–डॉ0 शिवमंगल सिंह सुमन, डॉ0 विजयबहादुर सिंह
2. छायावादोत्तर हिन्दी साहित्य– डॉ0 जगमोहन मिश्र
3. नागार्जुन के काव्य में प्रगतिशील चिंतन–डॉ0 गोविंद के. बुरसे
4. मुक्तिबोध की लम्बी कविता–संवेदना और शिल्प – डॉ0 प्रकाश जेधे
5. अज्ञेय का साहित्य चिंतन – परोक्ष अपरोक्ष नामदेव जासूद
6. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ0 सूर्यनारायण रणसुभे।

———00———

अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर(छत्तीसगढ़)

सेमेस्टर पाठ्यक्रम

एम.ए. हिन्दी

सेमेस्टर–IV
प्रश्नपत्र–III (अनिवार्य)
पत्रकारिता

पूर्णांक:– 100
मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80
आंतरिक मूल्यांकन :– 20

प्रस्तावना–

पत्रकारिता आज जीवन समाज की धड़कन बन गई है। सिमटते हुए विश्व में स्नायु तंतुओं के समान काम कर रही है।दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिंट मीडिया, इंटरनेट आदि में इसका विकसित स्वरुप देखा जा सकता है। जिसके बिना आज आदमी का रहना कठिन है। साहित्यिकता के साथ–साथ रोजगारपरकता की आकांक्षा की पूर्ति भी इससे होती है। पुनर्जागरण, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, नारी तथा दलित जागरण में इसकी क्रांतिकारी भूमिका रही है। अतः इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन जाती है।

पाठ्य विषयः–

इकाई–01–
1. विश्व पत्रकारिता का उदय
2. भारत में पत्रकारिता का आरम्भ
3. पत्रकारिताः स्वरुप एवं विभिन्न प्रकार
4. हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव विकास

इकाई–02–
1. सम्पादन कला के सामान्य सिद्धांत
2. समाचार के विभिन्न स्त्रोत
3. सम्वाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्य पद्धति
4. पत्रकारिता से संबंधित लेखन सम्पादकीय, फीचर, रिपोतार्ज, साक्षात्कार, खोजी–समाचार, अनुवर्तन (फालोअप) आदि की प्रविधि।

इकाई–03–
1. इलेक्ट्रानिक मीडिया की पत्रकारिता–रेडियो, टी.वी., वीडियो, केबल मल्टीमीडिया और इंटरनेट की पत्रकारिता।
2. प्रिंट पत्रकारिता मल्टीमीडिया–मुद्रण कला, प्रुफ शोधन, ले आउट तथा पृष्ठ सज्जा।
3. पत्रकारिता का प्रबन्ध प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री, तथा वितरण व्यवस्था ।
4. मुक्त प्रेस की अवधारणा।

इकाई–04– 1. लोक सम्पर्क तथा विज्ञापन
2. प्रसार भारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी
3. प्रेस संबन्धी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता
4. प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तम्भ के रुप में पत्रकारिता का दायित्व

इकाई–05– लघुत्तरीय एवं अतिलघुत्तरीय/वस्तुनिष्ठ प्रश्न संपूर्ण पाठ्यक्रम से किए जायेंगे।

इकाई विभाजन अंक विभाजन

इकाई 01– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 02– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 03– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 05– लघुत्तरीय प्रश्न	05	5x2	= 10
अतिलघुउत्तरीय/वस्तुनिष्ठ प्रश्न	10	10x1	= 10
		योग–	80
	आंतरिक मूल्यांकन–		20

सहायक पुस्तकें–

1. हिन्दी पत्रकारिता–डा0 कृष्ण बिहारी मिश्र भारतीय ज्ञानपीठ
2. हिन्दी पत्रकारिता में आठवाँ दशक – मारियोका आफेकेदी–प्रासंगिक प्रकाशन–नई दिल्ली
3. हिन्दी पत्रकारिता के मूल सिद्धांत – श्रीपाल शर्मा–विभूति प्रकाशन दिल्ली
4. खोजी पत्रकारिता – हरिमोहन
5. इन्टरनेट पत्रकारिता– सुरेश कुमार
6. संवाद और संवाददाता– राजेन्द्र–चंड़ीगढ़ हरियाणा साहित्य अकादमी

सेमेस्टर–IV

प्रश्नपत्र–IV (वैकल्पिक)

(क) लोक साहित्यएवं छत्तीसगढ़ी साहित्य

पूर्णांकः– 100

मुख्य सेमेस्टर परीक्षा :– 80

आंतरिक मूल्यांकन :– 20

हिन्दी जगत में विद्यमान विभाषाओं में अमूल्य लोक साहित्य संपदा विद्यमान है। इसके संकलन, संपादन, सर्वेक्षण, प्रकाशन द्वारा ही अपनी मूल राष्ट्रीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है और हिन्दी का जनाधार बढ़ाया जा सकता है।

हिन्दी साहित्य मात्र खड़ी बोली तक सीमित नहीं है उसकी अनेक विभाषाओं में आज भी पर्याप्त साहित्य सृजन किया जा रहा है। प्राचीन साहित्य तो मुख्यतः विभाषाओं में ही प्राप्त है। अस्तु इसके अध्ययन की उपयोगिता निर्विवाद है।

इकाई–01– 1. लोक साहित्य, लक्षण, परिभाषा, क्षेत्र

2. लोक और लोक–वार्ता, लोक–वार्ता और लोक–विज्ञान

3. लोक संस्कृति अवधारणा, लोकवार्ता और लोक संस्कृति, लोक संस्कृति और साहित्य, लोक साहित्य अवधारणा,

इकाई–02– लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का संक्षिप्त अध्ययन– लोक गीत, लोक नाट्य, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–नृत्य, नाट्य लोक संगीत

इकाई–03– छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास, प्रवृत्तियाँ, छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य का उद्भव और विकास, विधाँए–उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, कहानी, महाकाव्य

इकाई–04– दानलीला–सुन्दरलाल शर्मा

इकाई–05– लघुत्तरीय एवं अतिलघुत्तरीय / वस्तुनिष्ठ प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से किये जायेंगे।

इकाई विभाजन	अंक विभाजन		
इकाई 01– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 02– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 03– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 04– आलोचनात्मक प्रश्न	01	15x1	= 15
इकाई 05– लघुत्तरीय प्रश्न	05	5x2	= 10
अतिलघुउत्तरीय / वस्तुनिष्ठ प्रश्न	10	10x1	= 10
		योग–	80
	आंतरिक मूल्यांकन–		20

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लोक साहित्य विज्ञान–डॉ0 सत्येन्द्र
2. लोक साहित्य पहचान–रामनारायण उपाध्याय–कालिदास प्रकाशन उज्जैन
3. हिन्दी लोक साहित्य – गणेशदत्त सारस्वत–विद्या विहार कानपुर
4. लोक साहित्य – सुरेश चंद्र त्यागी–मेरठ वि.वि. परिषद
5. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य एवं लोक जीवन का अधयधन– डॉ शकुन्तला वर्मा
6. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन–नंद किशोर तिवारी
7. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य और भाषा– डॉ बिहारीलाल साहू
8. दानलीला – सुन्दरलाल शर्मा

अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

सेमेस्टर पाठ्यक्रम

एम.ए. हिन्दी

सेमेस्टर–IV

प्रश्नपत्र–IV (वैकल्पिक)

(ख) लघुशोध प्रबंध

(एम.ए. हिन्दी प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में सम्मिलित रूप से 60 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी ही लघुशोध प्रबंध लिखने की पात्रता रखेंगे)

पूर्णांक–100

प्रस्तावना–

अदृश्य को दृश्य, अस्पष्ट को स्पष्ट, अज्ञेय को ज्ञेय और आवृत को अनावृत करने की जिज्ञासा मानव में स्वभाविक रूप से होती है। इसी क्रम में मनुष्य जीवन पर्यन्त अनुसंधान में लगा रहता है। नये–नये उपकरण, नये–नये तथ्य, नयी–नयी उपलब्धियाँ इसी शोध का परिणाम है।

हिन्दी भाषा में अनेक विधाओं की रचनाएँ, कहांनी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, लधुकथा, कविता, महाकाव्य, खण्डकाव्य, व्यंग्य, यात्रावृतान्त, आलेख, संस्मरण, रेखाचित्र आदि निरन्तर प्रकाशित हो रहे है। इन प्रकाशित रचनाओं का अध्ययन करना तथा उनकी समीक्षा करना आवश्यक है।

पाठ्य विषय–

1. किसी भी विधा की कम से कम दो अधिक से अधिक चार नवीनतम् कृतियों का अध्ययन और समीक्षा
2. समीक्षा कम से कम 80–100 टंकित पृष्ठों में की जायें।
3. छात्र द्वारा चयन की गई कृति का प्रकाशन तीन वर्ष पूर्व हुआ हों ।

उदाहरण– छात्र यदि 2017 की मुख्य परीक्षा में शामिल हो रहा है तो उसके द्वारा चयन की गई कृति का प्रकाशन वर्ष 2014 के पहले का नहीं होना चाहिए।

अंक विभाजन

आंतरिक परीक्षक (जो निर्देशक भी हो)– 50 अंक

बाह्य परीक्षक– 50 अंक